छुटकारे का इतिहास – भाग 1

अध्याय 2: दर्द और दिव्य प्रबन्ध

डॉ. डेविड प्लॉट

यदि आपके पास बाइबल है, और मैं आशा करता हूँ कि आपके पास है, तो आप मेरे साथ उत्पत्ति 37 निकालें। मैं ने आपको बताया था कि आज मैं भारत के बारे में ज्यादा बात नहीं करूँगा, परन्तु मैं आपको एक झलक दिखाना चाहता हूँ। मेरे साथ परमेश्वर के ऐश्वर्य और आश्चर्य और उसकी खूबसूरती के बारे में सोचें। अक्सर हम सृष्टि के बारे में सोचते हैं और उसकी उत्कृष्टता के प्रदर्शन को देखते हैं। आप ग्रैण्ड केन्यन में जाकर परमेश्वर की खूबसूरती और आश्चर्य को देखें। परन्तु मैं आपको कुछ ऐसा बताऊँगा जो उसका प्रतिद्वन्द्वी है। एक महिला के चेहरे की ओर देखना जिसने एक साल पहले तक कभी मसीह का नाम नहीं सुना था; जिसके पास अपने और अपने बच्चे के लिए स्वच्छ जल नहीं था, उसके चेहरे की ओर देखना जब वह अपने स्वस्थ बच्चे को गोद में लिए हुए बताती है कि वह मसीह में कैसे आई। यह परमेश्वर की खूबसूरती और आश्चर्य है। यह भारतीय झुग्गी के बीच में आराधना है, और कलीसिया, मैं आपके लिए परमेश्वर की स्तुति करता हूँ। आप में जीवित सुसमाचार के लिए मैं परमेश्वर की स्तुति करता हूँ।

यह मार्ग जिस पर हम चल रहे हैं संभवतः सबसे आसान मार्ग नहीं है, परन्तु यह एक अच्छा मार्ग है। और इस मार्ग पर भी, हमारे समान वचन के बीच से चलना, क्या अच्छा नहीं है, इसके बीच से चलना? जब मैं विमान में इस सप्ताह वापस लौट रहा था, आज के लिए अध्ययन कर रहा था, और मैं बहुत कठिनाई से अपनी जगह पर बैठ पा रहा था। मेरे पास बैठा व्यक्ति, दुर्भाग्यवश, अंग्रेजी नहीं जानता था, क्योंकि यदि वह जानता, तो उस यात्रा में वह आठ घण्टे के सन्देश को सुनता। फिर भी मैं ने उसके साथ बाँटने के बारे में सोचा, और पवित्र आत्मा से अनुवाद करने के लिए कहा। और यहाँ पर हम उत्पत्ति 37–50 को देखने वाले हैं, जो युसुफ का जीवन है। यदि आप इस अध्ययन के साथ निरन्तर पढ़ते आए हैं, तो इस सप्ताह आपने इसे पढ़ा होगा, और मैं चाहता हूँ कि आप युसुफ के जीवन पर एक नजर डालें, उसकी कहानी, जिसे कभी पुराने नियम की जीवनियों में सर्वाधिक कलात्मक और सर्वाधिक मनोहर माना जाता था। मैं चाहता हूँ कि हम इसे देखें, और फिर मैं चाहता हूँ कि हम देखें कि छुटकारे की इस भव्य कहानी में उसकी कहानी और हमारी कहानियाँ कैसे एक साथ मिलती हैं, और इसलिए हम उत्पत्ति 37 में शुरू करने जा रहे हैं। हम शेष कहानी के लिए आधार को तैयार करने के लिए पहले 11 पदों को पढ़ेंगे, और वहाँ से हम आगे की ओर बढ़ेंगे। तो, मेरे साथ उत्पत्ति 37:1 से शुरू करें।

याकूब तो कनान देश में रहता था, जहाँ उसका पिता परदेशी होकर रहा था। याकूब के वंश का वृत्तान्त यह हैः युसुफ सत्रह वर्ष का होकर अपने भाइयों के संग भेड़–बकरियों को चराता था; और वह लड़का अपने पिता की पत्नी बिल्हा और जिल्पा के पुत्रों के संग रहा करता था; और उनकी बुराइयों का समाचार अपने पिता के पास पहुँचाया करता था। इस्राएल अपने सब पुत्रों से बढ़ के युसुफ से प्रीति रखता था, क्योंकि वह उसके बुढ़ापे का पुत्र थाः और उसने उसके लिए एक रंगबिरंगा अंगरखा बनवाया। परन्तु जब उसके भाइयों ने देखा कि हमारा पिता हम सब भाइयों से अधिक उसी से प्रीति रखता है, तब वे उससे बैर करने लगे और उसके साथ ठीक से बात भी नहीं करते थे।

युसुफ ने एक स्वप्न देखा, और अपने भाइयों से उसका वर्णन किया; तब वे उससे और भी द्वेष करने लगे। उसने उनसे कहा, "जो स्वप्न मैं ने देखा है, उसे सुनोः हम लोग खेत में पूले बाँध रहे हैं, और क्या देखता हूँ कि मेरा पूला उठकर सीधा खड़ा हो गया; तब तुम्हारे पूलों ने मेरे पूले को चारों तरफ से घेर लिया और उसे दण्डवत् किया।" तब उसके भाइयों ने उससे कहा, "क्या सचमुच तू हमारे ऊपर राज्य करेगा? या क्या सचमुच तू हम पर प्रभुता करेगा?" इसलिए वे उसके स्वप्नों और उसकी बातों के कारण उससे और भी अधिक बैर करने लगे। फिर उसने एक और स्वप्न देखा, और अपने भाइयों से उसका भी यों वर्णन किया, "सुनो, मैंने एक और स्वप्न देखा है, कि सूर्य और चन्द्रमा और ग्यारह तारे मुझे दण्डवत् कर रहे हैं।" इस स्वप्न का उसने अपने पिता और भाइयों से वर्णन किया तब उसके पिता ने उसको डाँट कर कहा, "यह कैसा स्वप्न है जो तू ने देखा है? क्या सचमुच मैं और तेरी माता और तेरे भाई सब जाकर तेरे आगे भूमि पर गिरके दण्डवत् करेंगे?" उसके भाई उससे डाह करते थे; पर उसके पिता ने उसके उस वचन को स्मरण रखा।

यह युसुफ की कहानी का आरम्भ है। पिछले सप्ताह, हमने अब्राहम की कहानी को देखा, उत्पत्ति 12, 15, और 17 में। इस कहानी के बारे में हमने छुटकारे के इतिहास, परमेश्वर पर विश्वास करना, की अध्याय 1 में बात की थी। अब, मैं चाहता हूँ कि हम युसुफ की कहानी, अध्याय 2 में, दर्द और दिव्य प्रबन्ध को देखें। मैं इस बात से जूझा कि किस प्रकार युसुफ की कहानी की सर्वोत्तम झलक दिखाऊँ। आशा है, आपने इसे पढ़ लिया है परन्तु मैं और भी आगे बढ़ना चाहता हूँ। युसुफ के मूलतः आठ चित्रण हैं, जो युसुफ की कहानी की एक झलक को पाने में हमारी सहायता करेंगे, तो हम शुरू करते हैं। युसुफ से हमारा परिचय होता है – पहला चित्रण – पसन्दीदा पुत्र के रूप में। जब कहानी शुरू होती है, तब युसुफ 17 वर्ष का था, और 17 वर्षों तक वह स्वर्णिम बालक था। अपने पिता का दुलारा। हम जानते हैं कि याकूब अपनी पत्नी

राहेल से कितना प्रेम करता था। राहेल लम्बे समय तक बाँझ थी, और फिर परमेश्वर ने उसे एक पुत्र, युसुफ दिया, और उसके बाद बिन्यामीन। परन्तु याकूब अपने दूसरे पुत्रों से अधिक युसुफ से प्रेम रखता था, जो उसके द्वारा युसुफ को दिए गए रंगबिरंगे अंगरखे से प्रकट है। तो, युसुफ से हमारा परिचय पसन्दीदा पुत्र के रूप में होता है, जिसका अर्थ यह भी है – दूसरा चित्रण – तिरस्कृत भाई।

जब युसुफ के अपने भाइयों से संबंध की बात आती है, तो युसुफ से हमारा परिचय एक ऐसे व्यक्ति के रूप में होता है जो अपने भाइयों की बुराइयों को पिता तक पहुँचाता था। क्या आप इससे नफरत नहीं करते? जैसे कि जब आप बच्चे थे, और आपने कुछ गलत किया और आपके भाई या बहन इसे देख लेते हैं, तो आप सबसे पहले उनसे क्या कहेंगे? "तुम कुछ भी करो, लेकिन मम्मी या पापा से न कहना," और वे सबसे पहले क्या करते हैं? वे जाकर मम्मी या पापा को बता देते हैं। यह लगभग जन्मजात है। इस सप्ताह मैं घर में आया और मैं घर में अपने बेटों, जोशुआ और कालेब के साथ लुका–छिपी का खेल खेल रहा था, और अब गिनने की बारी कालेब की थी और मैं तथा जोशुआ छिपने वाले थे। और कालेब गिनती करने के लिए दूर जाता है, और जोशुआ सोचता है कि कमरे के बीच में छिपना सबसे अच्छा है, जहाँ आस–पास कुछ भी नहीं है, और उसे विश्वास है कि यह स्थान छिपने के लिए अच्छा है। और वह वहीं पर खड़ा रहकर कहता है, "मैं यहाँ छिपा हूँ।" मैं ने कहा, "ठीक है दोस्त, लेकिन मैं तुम्हारे साथ नहीं हूँ। मैं अलमारी के पीछे छिपने के लिए जा रहा हूँ, तुम चाहे जो भी करो, कालेब को मत बताना कि मैं यहाँ हूँ। और कालेब कहता है, "तैयार हो या नहीं, मैं आ रहा हूँ," वह अन्दर आता है और जोशुआ को खोज लेता है क्योंकि वह कमरे के बीच में खड़ा है, और कालेब पूछता है, "डैडी कहाँ हैं?" मैं छिपा हुआ उनकी बातों को सुन रहा हूँ, और जोशुआ का जवाब, "वे अलमारी के पीछे हैं।"

और यह युसुफ है, भाइयों की सूचना देने वाला, और सुबह नाश्ते की मेज पर आकर जब वह अपने स्वप्न के बारे में बताता है तो कोई लाभ नहीं होता है। "तुम कभी अनुमान नहीं लगा सकते कि मैं ने क्या सपना देखा। तुम मेरे सामने दण्डवत् कर रहे थे। सूर्य, चन्द्रमा और तारे मेरे सामने दण्डवत् करते हैं।" वह तिरस्कृत भाई था, और इसलिए एक दिन, जब उसके भाई खेत में थे, वे युसुफ को आते देखते हैं, अपने रंगीन अंगरखे में अकड़त हुए, और वे निर्णय लेते हैं कि बहुत हो चुका, और वे कहते हैं कि वे उसे मारना चाहते हैं। रूबेन उन्हें युसुफ की हत्या न करने के लिए मनाता है, "हम उसे एक गड़हे में फेंक देते हैं," और रूबेन ने सोचा था कि बाद में वह आकर युसुफ को बचा सकता है। और वे उसे एक गड़हे में फेंक देते हैं, परन्तु यहूदा की योजना वास्तव में सफल होती है। सारे भाई एक साथ बैठे हैं, और इश्माएलियों का एक समूह, जो इस कहानी में मिद्यानी भी कहलाते हैं, आता है और यहूदा कहता है, "क्यों न हम उसे बेच

दें? उस से लाभ कमाएँ?" और वे 20 शेकेल में अपने भाई को इश्माएलियों को दे देते हैं, और युसुफ के रंगबिरंगे अंगरखे को लेकर, लहू में डुबाकर अपने पिता के पास लौटते हैं, एक कहानी बनाते हैं कि कैसे जंगली जानवर ने युसुफ को मार डाला। और अगले 20 से अधिक वर्षों तक, याकूब अपने प्रिय पुत्र की मृत्यु पर आँसू बहाता है।

प्रिय पुत्र, तिरस्कृत भाई। तीसरा चित्रण, विदेशी धरती पर एक गुलाम। हम अध्याय 39 में आते हैं, अध्याय 38 में यहूदा और तामार के बीच एक संक्षिप्त प्रसंग के बाद, जो कि एक धुँधला प्रसंग था। यहूदा के वंश की रक्षा के लिए महत्वपूर्ण, परन्तु वहाँ कई सवाल उठते हैं। उत्पत्ति 39 में आइए, और वहाँ हम देखते हैं।

> जब युसुफ मिस्र में पहुँचाया गया, तब पोतीपर नामक एक मिस्री ने जो फिरौन का हाकिम और अंगरक्षकों का प्रधान था, उसको इश्माएलियों के हाथ से, जो उसे वहाँ ले गए थे, मोल लिया। युसुफ अपने मिस्री स्वामी के घर में रहता था, और यहोवा उसके संग था इसलिए वह भाग्यवान पुरूष हो गया, और युसुफ के स्वामी ने देखा कि यहोवा उसके संग रहता है, और जो काम वह करता है उसको यहोवा उसके हाथ से सफल कर देता है। तब उसकी अनुग्रह की दृष्टि उस पर हुई, और वह उसकी सेवा टहल करने के लिए नियुक्त किया गया; फिर उसने उसको अपने घर का और अपनी सारी सम्पत्ति का अधिकारी बनाया, तब से यहोवा युसुफ के कारण उस मिस्री के घर पर आशीष देने लगा; और क्या घर में, क्या मैदान में, उसका जो कुछ था सब पर यहोवा की आशीष होने लगी।

इसलिए, उसने अपना सब कुछ युसुफ के हाथ में यहाँ तक छोड़ दिया कि अपने खाने की रोटी को छोड़, वह अपनी सम्पत्ति का हाल कुछ न जानता था। यहाँ जो हो रहा है उससे चूक न जाएँ। आपको याद है उत्पत्ति 12, पिछले सप्ताह हमने देखा परमेश्वर ने कहा था, "अब्राहम, तेरे वंश के द्वारा सारी जातियाँ मेरी आशीष पायेंगी।" हम इस तस्वीर को देख रहे हैं। अब्राहम, इसहाक, याकूब, युसुफ, अब्राहम के वंश के द्वारा, वह कहाँ है, इस मिस्री के घर में परमेश्वर की आशीष, विदेशी धरती पर एक दास, जैसे कि यही काफी नहीं है, पोतीपर के घर का एक दास। एक दिन, पोतीपर की पत्नी उसके पास आती है। वह कई अवसरों पर उसे संकेत दे चुकी थी। इस सप्ताह जब मैं उत्पत्ति 39 पढ़ रहा था, मैं ने और कुछ नहीं केवल प्रार्थना की, कि विश्वास के परिवार के पुरूष युसुफ के समान लैंगिक परीक्षाओं का जवाब दें; और स्त्रियाँ पवित्र हों। पद 9, उस पद के ठीक बीच में, युसुफ कहता है, "इसलिए भला, मैं ऐसी दुष्टता करके परमेश्वर का अपराधी क्यों बनूँ?" भाइयो, किसी भी परीक्षा के प्रति आपका जवाब यही हो, इन्टरनेट पर किसी चित्र को

देखना, या सहकर्मी से इश्कबाजी करना, या किसी लैंगिक परीक्षा के पास जाना आप कहेंगे, "भला, मैं ऐसी दुष्टता करके परमेश्वर का अपराधी क्यों बनूँ?" हे परमेश्वर, इस विश्वास के परिवार में ऐसी स्त्रियों को खड़ा कर जो पवित्रता से प्रेम करें, और पवित्रता से समझौते की दिशा में एक कदम भी न बढ़ाएँ।

एक विदेशी धरती पर गुलाम अगला चित्रण भी है, पवित्र दास। उस अनैतिकता से कितना भिन्न जो हम कई बार पुरखों की कहानियों में देखते हैं, और अध्याय 38 में भी, इससे ठीक पहले, लेकिन पोतीपर की पत्नी के द्वारा युसुफ परखा जाता है, सारे संभावित स्पष्टीकरण दिए जा सकते हैं, "किसी को पता नहीं चलेगा। कोई नहीं देखेगा। पोतीपर ने अपने घर में मुझे और सब कुछ दिया है, फिर उसकी पत्नी क्यों नहीं?" और फिर भी, युसुफ भागता है। और यह, ठीक यहाँ, इससे न चूकें, मुझे निश्चय है कि परमेश्वर अपने सर्वोच्च अनुग्रह में पुरूषों और स्त्रियों को यह शब्द सुनाना चाहता है – भागो। भागो। यदि लैंगिक परीक्षा से खेलने, इश्क लड़ाने का कोई आभास है, तो आज आपके लिए परमेश्वर का वचन है भागो। तेजी से भाग, दूर भाग जा। उस शब्द को सुनें। मैं ने इस सप्ताह जॉन पाइपर से कुछ ऐसा पढ़ा जो अत्यन्त मर्मस्पर्शी था। उसने कहा, "गुप्त पाप में पकड़ा जाना एक भयानक बात है। उससे बदतर केवल एक बात हैः नहीं पकड़ा जाना।" भागो। परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा, आज इस शब्द को सुनें, भाग।

पवित्र सेवक भागता है, लेकिन पोतीपर की पत्नी उसके वस्त्र को पकड़ती है, और उसके अगले चित्रण का आधार तैयार होता है – बदनाम बन्दी। वह उस पर दोष लगाती है, और युसुफ को बिना किसी गलती के बन्दीगृह में डाल दिया जाता है। वह धर्मी और पवित्र है, और 13 वर्षों के लिए जेल में डाल दिया जाता है। बदनाम और बन्दी, वह वास्तव में बन्दीगृह में अगुवा बन जाता है। उसे कई लोगों पर अधिकार दिया जाता है, और एक दिन पिलानेहारों के प्रधान और पकानेहारों के प्रधान, जिन्होंने फिरौन को क्रोधित किया था, बुरा भोजन बनाया या कुछ और, और उन्हें जेल में डाल दिया गया। एक रात, वे अच्छी तरह सो नहीं पाते, सपने देखते हैं, अगली सुबह उठते हैं और युसुफ वहाँ से निकलता है, उनके चेहरे के भावों को देखता है और पूछता है, "कोई गड़बड़ है?" वे अपने स्वप्नों के बारे में उसे बताते हैं। युसुफ, परमेश्वर के आत्मा के द्वारा जो उसके अन्दर था, स्वप्नों का अर्थ समझाता है। पिलानेहारों के प्रधान से, "तू जीवित रहेगा।" पकानेहारों के प्रधान से, "तू मर जाएगा।" और बिल्कुल ऐसा ही होता है। और युसुफ पिलानेहारों के प्रधान से कहता है, "तू जीवित रहेगा, और जब तू बन्दीगृह से मुक्त हो जाए तो मुझे भूल न जाना। मुझे याद रखना। फिरौन से मेरे बारे में कहना।" पिलानेहारों का प्रधान जीवित रहता है और बन्दीगृह से आजाद हो जाता है, फिर भी युसुफ को भूल जाता है। अगले दो वर्षों तक युसुफ बन्दीगृह में ही रहता है, लेकिन एक रात स्वयं फिरौन ठीक से सो नहीं पाता, स्वप्न, और पूरे मिस्र में उनका अर्थ समझाने वाला उसे कोई नहीं

मिलता। और जब वह विभिन्न जादूगरों से स्वप्न का अर्थ बताने के लिए कह रहा है, तो पिलानेहारों का प्रधान इसे सुनता है और फिरौन के पास जाकर कहता है, "मैं एक व्यक्ति को जानता हूँ जो तेरे स्वप्नों का अर्थ समझा सकता है," और अचानक, युसुफ को बन्दीगृह से निकालकर फिरौन के सामने लाने का आदेश दिया जाता है।

परमेश्वर के आत्मा के द्वारा जो उसके अन्दर था, वह फिरौन के स्वप्नों का अर्थ समझाता है, कि देश में सात वर्ष बहुतायत के होंगे, उसके बाद देश में सात वर्ष अकाल पड़ेगा, और वह फिरौन से कहता है, "तुझे अभी तैयारी करनी है। तुझे इन अकाल के समयों के लिए भोजन एकत्रित करना है।" फिरौन युसुफ में परमेश्वर के आत्मा से चकित हो जाता है और कहता है, "केवल तू ही यह कार्य कर सकता है और इसमें अगुवाई कर सकता है," और वह युसुफ को, जो उस दिन तक एक बन्दी था, मूलरूप में मिस्र के प्रधानमन्त्री का पद देता है। इस विरोधाभास को देखें। 41:41 में देखें। इस विरोधाभास के बारे में सोचें, जहाँ हम युसुफ को एक पल बन्दी के रूप में और अगले पल – इसे सुनें – फिरौन ने 41:41 में युसुफ से कहा, "सुन, मैं तुझ को मिस्र के सारे देश के ऊपर अधिकारी ठहरा देता हूँ।" तब फिरौन ने अपने हाथ से अँगूठी निकालके युसुफ के हाथ में पहना दी; और उसको बढ़िया मलमल का वस्त्र पहिनवा दिया, और उसके गले में सोने की जंजीर डाल दी; और उसको अपने दूसरे रथ पर चढ़वाया; और लोग आगे आगे यह प्रचार करते चले कि घुटने टेककर दण्डवत् करो, और उसने उसको मिस्र के सारे देश के ऊपर प्रधान मंत्री ठहराया।" और इस प्रकार उसने उसे सारे मिस्र के ऊपर ठहराया, और केवल मिस्र देश पर ही नहीं। यथार्थ यह है, कि जब अकाल पड़ा तो सारे देश से, और मिस्र के बाहर से भी, लोग आकर युसुफ के कदमों में घुटने टिका रहे थे। विदेशी धरती पर जो दास था वह अब सारे देश का अधिकारी बन गया था, और अध्याय 42 के लिए आधार तैयार होता है, जब अकाल और उसके प्रभावों ने याकूब और उसके भाइयों को प्रभावित किया।

42:1 में, याकूब को मालूम पड़ा कि मिस्र में अनाज बेचने के लिए था और उसने अपने पुत्रों से कहा, "तुम एक–दूसरे का मुँह क्यों देख रहे हो।" फिर उसने कहा, "मैं ने सुना है कि मिस्र में अन्न है; इसलिए तुम लोग वहाँ जाकर हमारे लिए अन्न मोल ले आओ, जिससे हम न मरें, वरन् जीवित रहें।" अतः, युसुफ के दस भाई अनाज खरीदने के लिए मिस्र में जाते हैं, और यहाँ हम देखते हैं कि ये भाई दण्डवत् करने के लिए युसुफ के सामने आते हैं। वे उसके पास आते हैं, वे उसे नहीं पहचानते हैं; वह उन्हें पहचान लेता है। और यह एक प्रक्रिया को शुरू करता है जिससे युसुफ अगले कुछ अध्यायों में – अन्तिम से पहले का चित्रण बनता है – पुनः स्थापित करने वाला भाई। इन अध्यायों में बहुत कुछ है। इसके बारे में संभवतः

बहुत सारे सवाल होंगे कि युसुफ इस समय ऐसा, या उस समय ऐसा क्यों कर रहा है। लेकिन, जो मैं चाहता हूँ कि आप देखें और ईमानदार रहें, यह कुछ ऐसा है जिसे मैं ने वास्तव में अपने पिछले अध्ययन में नहीं देखा था और जिसे पिछले सप्ताह इस पद्यांश को पढ़ते समय मैं ने देखा, परन्तु मैं चाहता हूँ कि आप मेरे साथ सोचें, इसे अपने मन में बैठा लें, इस सारे बदलाव में उस महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में जो यहूदा निभाता है। जब आप पीछे हटकर इसे देखते हैं, तो वास्तव में, इस कहानी में यहूदा और युसुफ के बीच एक मजबूत पारस्परिक प्रभाव है। मैं पहले ही बता चुका हूँ कि युसुफ को गुलामी में बेचने का विचार यहूदा ही का था, इस तस्वीर को लाने के लिए। स्पष्टतः, यहूदा नहीं जानता था कि क्या होने वाला था।

जब युसुफ के भाई उसके सामने आते हैं, और युसुफ अन्न के साथ उन्हें वापस घर भेज देता है, और अब उनके वापस आने का समय है, याकूब निर्णय लेने का प्रयास कर रहा है कि उन्हें भेजे या नहीं, विशेषतः बिन्यामीन के कारण क्योंकि उसे भी उनके साथ बुलाया गया था। उसे निश्चय नहीं है, और यहूदा आगे बढ़कर कहता है, "मेरे पिता, याकूब, हमें जाना है।" यहूदा आगे बढ़कर एक प्रतिज्ञा करता है, गारण्टी देता है। वह कहता है, "मैं तुझे गारण्टी देता हूँ कि बिन्यामीन सुरक्षित रहेगा।" जब वे युसुफ के पास आते हैं, तो यहूदा ही अपने भाइयों के प्रतिनिधि के रूप में बात करता है। एक समय पर यहूदा ही अपने आप को बिन्यामीन के स्थानापन्न के रूप में प्रस्तुत करता है, और फिर, युसुफ द्वारा स्वयं को अपने भाइयों पर प्रकट करने और यह कहने के बाद कि, "जाकर मेरे पिता और अपने घरानों को यहाँ लाओ," तब यहूदा ही इस्राएल के पुत्रों की उस देश में अगुवाई करता है। और इस प्रकार, इस तस्वीर में, युसुफ पुनः स्थापित करने वाला भाई है, जो परिवार के सुरक्षित रखता है, और यह सब अन्तिम चित्रण पर लाता है, पुनः मिला पुत्र। 46:28 में, याकूब ने यहूदा को अपने आगे युसुफ के पास भेजा कि वह उन्हें गोशेन का मार्ग दिखाए, और वे गोशेन में आते हैं। और इसे सुनें, 46:29, तब युसुफ अपना रथ जुतवाकर अपने पिता इस्राएल से भेंट करने के लिए गोशेन देश को गया, और उससे भेंट करके उसके गले से लिपटा, और बहुत देर तक उसके गले से लिपटा हुआ रोता रहा। तब इस्राएल ने युसुफ से कहा, 20 से अधिक वर्षों तक अपने पुत्र की मृत्यु के लिए रोने के बाद, "मैं अब मरने से भी प्रसन्न हूँ, क्योंकि तुझे जीवित पाया और तेरा मुँह देख लिया।" पुत्र का अपने पिता से पुनर्मिलन। दो अध्यायों के बाद, अध्याय 48, याकूब युसुफ के पुत्रों को आशीष देता है। अध्याय 49, याकूब की मृत्यु हो जाती है, और 50:1 कहता है, "तब युसुफ अपने पिता के मुँह पर गिरकर रोया और उसे चूमा।" पुनः मिला हुआ पुत्र। और यह युसुफ की कहानी है।

मैं चाहता हूँ कि आप एक पल के लिए पीछे हटें और उन आठ विविध चित्रणों को देखें। मैं चाहता हूँ कि आप उन्हें देखें और हो सके तो, एक अर्थ में, अपने आप को उनमें देखें। प्रिय पुत्र और तिरस्कृत भाई। क्या

आप कभी पारिवारिक संघर्ष का हिस्सा बने हैं? क्या आप कभी प्रिय पुत्र या पुत्री रहे हैं, या प्रिय पुत्र या प्रिय पुत्री नहीं रहे हैं? क्या आपका कभी भाई या बहन से झगड़ा हुआ है? हम अपने आप को उसकी जगह पर रख सकते हैं, क्या नहीं? विदेशी धरती पर एक गुलाम। क्या आपने अपने आप को कभी अनजानी जगह में पाया है? क्या आपने कभी अपने आप को चोट और दर्द के स्थान में पाया है? क्या आपने कभी उन लोगों के हाथों चोट खाई या दर्द सहा है जिनसे आप प्रेम करते हैं? पवित्र सेवक एक बदनाम बन्दी बनता है। क्या पवित्रता और धर्म का साथ देने के कारण आपको कभी दण्ड भुगतना पड़ा है? पवित्रता के परिणामस्वरूप, सब कुछ कठिन हो जाता है, सब कुछ बदतर हो जाता है। सारे देश के ऊपर अधिकारी, पुनः स्थापित करने वाला भाई, पुनः मिला हुआ पुत्र। क्या आपने अपने जीवन में, अपने परिवार में, अपने संबंधों में, कभी ऐसे समाधान की चाहत की है? इन चरणों में आप अपने आप को देख सकते हैं, और आप सोचें कि इन विभिन्न चरणों में युसुफ किस प्रकार आगे बढ़ा। एक प्रचारक ने बताया, जब वह इस कहानी के बारे में बता रहा था, उसने युसुफ सवाल का वर्णन किया। उसने कहा युसुफ सवाल यह हैः हे परमेश्वर, आप मेरे जीवन में क्या कर रहे हैं? क्या आपने कभी ऐसा सोचा है? क्या आप कभी इनमें से किसी चरण में आए हैं, आपके जीवन में यह चाहे कोई भी चरण हो, जहाँ आपने सोचा, "ऐसा क्यों हो रहा है? यह कैसे हुआ? परमेश्वर, आप यहाँ क्या कर रहे हैं?"

यह सारी कहानी उत्पत्ति 50:20 के मुख्य कथन के लिए आधार तैयार करती है, मुझे निश्चय है कि यह सारे पुराने नियम में सर्वोत्तम कथन है। यह इस सप्ताह के लिए हमारा स्मृति पद है। यदि आप चाहें, तो इसे पढ़ सकते हैं। यदि आपने इसे याद कर लिया है, तो इसे मेरे साथ कहें। "यद्यपि तुम लोगों ने मेरे लिए बुराई का विचार किया था; परन्तु परमेश्वर ने उसी बात में भलाई का विचार किया, जिससे वह ऐसा करे, जैसा आज के दिन प्रकट है, कि बहुत से लोगों के प्राण बचे हैं।" पुनः, बच्चों के लिए एक बड़ी चुनौती। परन्तु उसका अर्थ क्या है? इसका क्या अर्थ है, "यद्यपि तुम लोगों ने मेरे लिए बुराई का विचार किया थाद्व परन्तु परमेश्वर ने उसी बात में भलाई का विचार किया, जिससे वह ऐसा करे, जैसा आज के दिन प्रकट है, कि बहुत से लोगों के प्राण बचे हैं।" मैं चाहता हूँ कि आप इस पूरी तस्वीर में परमेश्वर के प्रबन्ध को देखें। इसका क्या अर्थ है, परमेश्वर का प्रबन्ध? मैं चाहता हूँ आप उसके बारे में सोचें जो हमने देखा है। हमने युसुफ के चित्रणों के बारे में बात की। आइए हम उसके बारे में सोचें जो इस कहानी में हमने परमेश्वर के बारे में देखा था। पहला, हमने सीखा कि वह सर्व–व्यापी यहोवा है। परमेश्वर के प्रबन्ध का यही अर्थ है। वह सर्व–व्यापी यहोवा है। इसे सर्वाधिक खूबसूरती से पोतीपर के घर में युसुफ की कहानी में समझाया गया है, इसलिए जल्दी से मेरे साथ उत्पत्ति 39 में चलें। आइए हम यहाँ के कुछ रिक्त स्थानों को भरें। मैं आपको एक वाक्यांश दिखाना चाहता हूँ जिसका उत्पत्ति 39 में चार बार वर्णन किया

गया है – आप इसे रेखांकित कर सकते हैं – दो बार इस अध्याय की शुरूआत में, दो बार अन्त में, एक तरह से पुस्तक के अन्त के रूप में जिसे लेखक हमारा ध्यान आकर्षित करने के लिए देता है।

39:1 को देखें। यह बताता है कि युसुफ को मिस्र में कैसे लाया गया था। पोतीपर, फिरौन के हाकिम, सैनिकों के सरदार, एक मिस्री, ने उसे इश्माएलियों से खरीदा था, जो उसे वहाँ लाए थे। पद 2, इसे रेखांकित करें, "यहोवा युसुफ के संग था।" यह पहली बार है। यही वो वाक्यांश है। "यहोवा युसुफ के संग था, और वह भाग्यवान पुरूष हो गया, और वह अपने मिस्री स्वामी के घर रहता था। उसके मिस्री स्वामी ने देखा कि दूसरी बार यहोवा उसके संग था, और यहोवा ने उसके हाथों के कार्यों को सफल किया।" युसुफ पोतीपर के घर में सफल क्यों था? अपनी बुद्धि के कारण? अपनी बड़ी दक्षता, अगुवाई, व्यक्तित्व के कारण? नहीं। वह सफल था क्योंकि यहोवा उसके संग था। आप अध्याय के अन्त में आते हैं, वह उसे गुलामी में बेचे जाने के ठीक बाद था; यह उसे बन्दीगृह में डाले जाने के ठीक बाद है, और पद 21 कहता है, "यहोवा युसुफ के साथ था।" इसे रेखांकित करें। "पर यहोवा युसुफ के संग संग रहा और उस पर करूणा की, और बन्दीगृह के दारोगा के अनुग्रह की दृष्टि उस पर हुई।" आप नीचे पद 23 में आते हैं, अन्तिम पद, "युसुफ के वश में जो कुछ था उसमें से बन्दीगृह के दारोगा को कोई भी वस्तु देखनी न पड़ती थी; क्योंकि यहोवा युसुफ के साथ था।" इसे रेखांकित करें। जो कुछ वह करता था, यहोवा उसे उसमें सफलता देता था। यहाँ युसुफ के जीवन के निम्नतम बिन्दू – एक दास, एक बन्दी। हम देखते हैं कि उन निम्नतम बिन्दुओं में, परमेश्वर उसके साथ था, और युसुफ के जीवन की हर सफलता का श्रेय परमेश्वर को जाता है, सर्व–व्यापी परमेश्वर को। युसुफ के जीवन के गहन, अन्धेरे समयों में, यहोवा उसके संग था। वह सर्वदा साथ रहने वाला यहोवा है।

दूसरा, परमेश्वर गूढ़ राजा है। वह राजा है, फिर भी गूढ़ है। यह रूत की कहानी के समान है जिसे हमने पिछले साल देखा था। यह रूचिकर है। जब आप इस पूरी कहानी को देखते हैं, उत्पत्ति 37 से उत्पत्ति 50 तक, आप परमेश्वर की ओर से अलौकिक सामर्थ के किसी आश्चर्यजनक, अद्‌भुत प्रदर्शन को नहीं देखते हैं। इसके विपरीत आप सारे मार्ग में गूढ़ संकेतों को देखते हैं जो परमेश्वर के अदृश्य हाथ की ओर ईशारा करते हैं जो इस कहानी के हर विवरण में कार्यरत है। अध्याय 45 को देखें। मैं आपको यह दिखाना चाहता हूँ। अध्याय 45, युसुफ अपने भाइयों पर अपनी पहचान को प्रकट करता है, और मैं चाहता हूँ कि आप इसे सुनें जो वह कहता है। जब युसुफ इन लोगों का सामना करता है, तो ये भाई उसे गुलामी में बेच देते हैं, जहाँ से वह बन्दीगृह में डाल दिया जाता है, जो उन्होंने किया था उसके कारण कई वर्षों तक उसने कष्ट सहा, ठीक? परन्तु सुनें वह क्या कहता है। पद 4, "फिर युसुफ ने अपने भाइयों से कहा, 'मेरे निकट

आओ।'" यह एक अतुल्य तस्वीर है। ये वे भाई हैं जो दण्ड के लायक हैं, और वह कहता है, "नहीं, मेरे निकट आओ," और वे निकट आए और उसने कहा, "मैं तुम्हारा भाई युसुफ हूँ, जिसको तुम ने मिस्र आने वालों के हाथ बेच डाला था। अब तुम लोग मत पछताओ, और तुम ने जो मुझे यहाँ बेच डाला, इससे उदास मत हो; क्योंकि परमेश्वर ने तुम्हारे प्राणों को बचाने के लिए मुझे तुम्हारे आगे भेज दिया है। क्योंकि अब दो वर्ष से इस देश में अकाल है; और अब पाँच वर्ष और ऐसे ही होंगे कि उनमें न तो हल चलेगा और न अन्न काटा जाएगा।" और दूसरी बार, "इसलिए परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे आगे इसी लिए भेजा कि तुम पृथ्वी पर जीवित रहो, और तुम्हारे प्राणों के बचने से तुम्हारा वंश बढ़े। इस रीति अब मुझ को यहाँ पर भेजनेवाले तुम नहीं," (तीसरी बार) "परमेश्वर ही ठहरा; और उसी ने मुझे फिरौन का पिता सा, और उसके सारे घर का स्वामी, और सारे मिस्र देश का प्रभु ठहरा दिया है। अतः शीघ्र मेरे पिता के पास जाकर कहो, 'तेरा पुत्र युसुफ यह कहता है कि परमेश्वर ने मुझे सारे मिस्र का स्वामी ठहराया है।"

इसे सुनें। युसुफ अपने भाइयों से कह रहा है, "तुम ने मुझे बेच दिया, परन्तु परमेश्वर ने मुझे यहाँ भेजा। परमेश्वर ने यह किया। जब मुझे दास के रूप में बेचा गया, तब वह परमेश्वर का कार्य था। जब मुझे बन्दीगृह में डाला गया, तब वह परमेश्वर का कार्य था। जब मुझे फिरौन के सामने बुलाया गया, तब वह परमेश्वर का कार्य था। इन सब को परमेश्वर ही करता रहा है।" देखें युसुफ क्या नहीं कहता है। युसुफ नहीं कहता, "तुम ने मुझे बेच दिया और परमेश्वर ने उसे भलाई में बदलने के द्वारा इसका जवाब दिया।" नहीं। युसुफ कह रहा है कि सारी तस्वीर परमेश्वर के नियन्त्रण में थी। परमेश्वर ने अकाल भेजा। वहाँ, पद 6 में – मेरे पास वहाँ जाने का समय नहीं है, परन्तु भजन 105:16–17, आप उसे लिख सकते हैं। भजन 105:16–17, परमेश्वर ने ही उस देश में अकाल भेजा और अन्न के सारे आधार को दूर कर दिया। उसने युसुफ नामक एक पुरूष को उनसे पहले भेजा था, जो दास होने के लिए बेचा गया था। परमेश्वर ने यह सब किया। अब, यह कैसे होता है? यह कैसे हो सकता है कि भाइयों ने उसे बेचा और परमेश्वर ने उसे भेजा? यहाँ पर हम देखते हैं, पुराने नियम में और पूर पवित्रशास्त्र में, दो अवर्णनीय मित्रों को। पहला, दिव्य सर्वोच्चता, "परमेश्वर ने मुझे भेजा। परमेश्वर ने यह किया। परमेश्वर ने मुझे दास बनने के लिए, बन्दी बनने के लिए भेजा। परमेश्वर ने यह सब किया।" इसलिए, यह सारी तस्वीर परमेश्वर के नियन्त्रण में है। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि भाइयों का इससे कोई संबंध नहीं था। दूसरा, दिव्य सर्वोच्चता और मानवीय उत्तरदायित्व, "तुम ने मुझे दास बनने के लिए बेचा। तुम ने ऐसा करने का निर्णय लिया। तुमने निर्णय लिया।" और यहाँ दिव्य सर्वोच्चता और मानवीय उत्तरदायित्व की तस्वीर है, दोनों एक साथ हैं।

अब आप इन दोनों को कैसे मिलाते हैं? इसे स्पष्ट नहीं किया जा सकता, लेकिन खण्डन भी नहीं किया जा सकता। यह पूरे पवित्रशास्त्र में है। यह दिव्य सर्वोच्चता और मानवीय उत्तरदायित्व का रहस्य है, और हमें सावधान रहना चाहिए। पवित्रशास्त्र में इस तस्वीर के आधार पर हमें जिस निष्कर्ष पर आना है, और जो हम इस वर्ष की हमारी शेष यात्रा में देखेंगे, मनुष्य के उत्तरदायित्व की अवहेलना नहीं की जा सकती है। हमें सावधान रहना चाहिए कि परमेश्वर की सर्वोच्चता के बारे में सोचते समय हम यह न सोचने लगें कि हम केवल खेल की कठपुतलियाँ हैं, यांत्रिक रूप से वो सब कर रहे हैं जिन्हें करने के लिए हमें आज्ञा दी गई है। हमारा उत्तरदायित्व है। हमारे निर्णय हैं जिनके लिए हमें उत्तरदायी ठहराया जाता है। यह स्पष्ट है। आप उत्पत्ति 49 में जाएँ, और आप याकूब को अपने पुत्रों को आशीष और कुछ को शाप देते हुए देखते हैं। उनके द्वारा किए गए कार्यों के लिए उन्हें उत्तरदायी ठहराया जाता है। मनुष्य के उत्तरदायित्व की अवहेलना नहीं की जा सकती है। हम सब अपने कार्यों, निर्णयों, और विकल्पों के लिए जिम्मेदार हैं। मनुष्य के उत्तरदायित्व की अवहेलना नहीं की जा सकती है। साथ ही, परमेश्वर की इच्छा में भी रूकावट नहीं डाली जा सकती है। परमेश्वर अपनी इच्छा को पूरी करेगा, यह निश्चित है। बुरी से बुरी परिस्थितियों में भी– गुलामी और बन्दीगृह में – युसुफ कहता है, "परमेश्वर ने मुझे यहाँ भेजा।" दिव्य सर्वोच्चता, मानवीय उत्तरदायित्व; परमेश्वर की इच्छा में रूकावट नहीं डाली जा सकती। परमेश्वर अपनी इच्छा पूरी करता है। परमेश्वर की यह तस्वीर (युसुफ की कहानी) हमें उसके प्रबन्ध को समझने में सहायता करती है कि वह सदैव–विश्वासयोग्य उद्धारकर्ता है। इस से न चूक जाएँ कि परमेश्वर की सर्वोच्चता और उसका प्रबन्ध आपको कहाँ ले जा रहे हैं।

कहानी दिखाती है, कि परमेश्वर अपने वायदों का पूरा करता है। परमेश्वर अपने वायदों को पूरा करता है। इसके बारे में सोचें। ये स्वप्न जो युसुफ ने बहुत पहले देखे और जिनके बारे में हम उत्पत्ति 37 में पढ़ते हैं, भाइयों के उसके सामने दण्डवत् करने के स्वप्न। क्या वे सच हुए? हाँ। बिल्कुल सच हुए। सोचें कि यह कैसे हुआ। स्वप्न देखने वाले को नष्ट करने के भाइयों के प्रयासों से स्वप्न सच हुए। यह उनकी योजनाओं में नहीं था, "आओ हम उसे दास बनने के लिए बेच दें, और उसके सपने सच हो जायेंगे।" परमेश्वर की इच्छा को रोका नहीं जा सकता। परमेश्वर अपने वायदों को पूरा करता है। इसके बारे में हम पहले ही बात कर चुके हैं, उत्पत्ति 12 में अब्राहम से परमेश्वर के वायदे, कि उसके वंश के द्वारा सारी जातियाँ आशीष पायेंगी। हम अब्राहम के वंश के द्वारा पूरे मिस्र और पूरी पृथ्वी पर आशीष को देख रहे हैं। परमेश्वर ने इसी की प्रतिज्ञा की थी। उत्पत्ति 15 में परमेश्वर ने जो कहा जिसे हमने पिछले सप्ताह देखा था, जब परमेश्वर ने अब्राहम से कहा, "तेरे वंश पराए देश में परदेशी होकर रहेंगे, और उस देश के लोगों के दास हो जायेंगे; और वे उनको 400 वर्ष तक दुःख देंगे।" और बिल्कुल ऐसा ही हो रहा है। परमेश्वर अब्राहम के वंश को,

अब्राहम के लोगों को, इस्राएल के लोगों को एक पराए देश में ले जा रहा है, और वायदे के देश में आने से पहले पीढ़ियों तक वे वहाँ रहेंगे। परमेश्वर अपने वायदों को पूरा कर रहा है। इसी कारण, अध्याय 46 में, जब परमेश्वर याकूब से बात करता है, वह कहता है, "मिस्र में जा। मैं तेरे प्रति विश्वासयोग्य हूँ, और मैं तेरे प्रति विश्वासयोग्य रहूँगा।" सदैव–विश्वासयोग्य उद्धारकर्ता, जो अपने वायदों को पूरा करता है, और परमेश्वर अपने लोगों की रक्षा करता है।

इससे न चूकें। अध्याय 46:27 में जाएँ। आपको याद होगा, कुछ सप्ताह पूर्व, हमने उत्पत्ति 3 में मनुष्य के पाप में गिरने को देखा था, और हमने संक्षेप में बात की कि उसका अन्त कैसे हुआ, एक अर्थ में, उत्पत्ति 10 और 11 में पाप की यह तस्वीर। उत्पत्ति 10 में, आपके पास जातियों की सूची है। उत्पत्ति 11 में, बाबेल का गुम्बद, परमेश्वर के विरूद्ध विद्रोह के कारण जातियों को तितर–बितर कर दिया जाता है, और यदि आप उत्पत्ति 10 में जातियों की सूची को देखकर उसे गिनते हैं, तो वहाँ 70 जातियाँ हैं। अतः, तस्वीर यह है कि परमेश्वर के विरूद्ध विद्रोह के कारण 70 जातियाँ तितर–बितर हो जाती हैं, और फिर, उसके ठीक बाद, उत्पत्ति 12 में, परमेश्वर के लोगों के एक समूह को, एक जाति को, इस्राएल जाति को अपनी ओर बुलाता है। और वहाँ से कहानी इन लोगों के विकास और इनकी रक्षा की है, और अकाल के बीच में, परमेश्वर अपने लोगों को सुरक्षित मिस्र के समृद्ध देश में लाता है, और देखें उत्पत्ति 46:27 क्या कहता है। और युसुफ के पुत्र, जो मिस्र में उससे उत्पन्न हुए, वे दो प्राणी थे। याकूब के घराने के कितने लोग मिस्र में आए थे? सत्तर। यह कोई संयोग नहीं है। मेरे पास वहाँ जाने का समय नहीं है, लेकिन व्यवस्थाविवरण 32:8 को लिख लें, "परमप्रधान ने एक एक जाति को निज निज भाग बाँट दिया, और आदमियों को अलग अलग बसाया, तब उसने देश देश के लोगों की सीमाएँ इस्राएलियों की गिनती के अनुसार ठहराईं।"

परमेश्वर अपने लिए लोगों को बना रहा है। इसके बारे में सोचें। कहानी के आरम्भ में हमने देखा, परमेश्वर के लोग, आदम और हव्वा, अदन के समृद्ध देश में, पाप से दूषित, परन्तु पुस्तक के अन्त में हम देखते हैं कि परमेश्वर ने अपने लिए निज लोगों को बनाया और उन्हें मिस्र के समृद्ध देश में रखा। पुस्तक का अन्त यह दिखाता है कि परमेश्वर अपने लिए लोगों को बना रहा है, और अकाल के बीच में भी, सर्वाधिक असामान्य परिस्थितियों में भी अपने लोगों की रक्षा के लिए वह कार्य करेगा। सदैव–विश्वासयोग्य रहने वाला उद्धारकर्ता, जो अपने वायदों को पूरा करता है और अपने लोगों की रक्षा करता है। वह सदा साथ रहने वाला प्रभु है, गूढ़ राजा, सदैव–विश्वासयोग्य उद्धारकर्ता, वायदों को पूरा करता है और अपने लोगों की रक्षा करता है। तो, इसका क्या अर्थ है? जब इस कहानी की छुटकारे की सम्पूर्ण कहानी से अनुरूपता की बात आती है तो इसका क्या अर्थ है, और हमारी अपनी कहानियों के लिए उसका क्या अर्थ है? और यहाँ पर मैं

आपके सामने तीन सत्यों को रखना चाहता हूँ और मेरी प्रार्थना है कि परमेश्वर उन्हें आपके मन और आत्मा में बैठाए, विशेष रूप से यदि आप इस समय दर्द या मुसीबत या चोट से गुजर रहे हैं, या फिर ये सत्य आगे आने वाले दर्द और मुसीबत और चोट की तैयारी होंगे, और ये सत्य आपके अन्दर रहेंगे।

पहला सत्य, भाइयो और बहनों, एक प्रभु है जो हमारे साथ है। इसके बारे में सोचें। वही परमेश्वर जो उस समय युसुफ के साथ था जब उसे गुलामी में बेचा गया, वही परमेश्वर जो बन्दीगृह की अन्धेरी कोठरियों में युसुफ के साथ था, वही परमेश्वर जो उस समय युसुफ के साथ था जब उसे पूरे देश के ऊपर अधिकारी बनने के लिए फिरौन के सामने बुलाया गया था। वही परमेश्वर आपके साथ है। इसे अपने अन्दर सोख लें। वह आपके साथ है। वह आपकी उन्नति में आपके साथ है, जब सब कुछ अच्छा चल रहा हो, और जब आपका जीवन और परिवार समृद्ध हो रहे हों, वह आपके साथ है और आप परमेश्वर की उपस्थिति के कारण समृद्ध हो रहे हैं, और वह आपके अपमान में आपके साथ है, जब परिस्थितियाँ बहुत बुरी हों और कुछ भी सही नहीं हो रहा हो। जब आप सोचते हैं कि आप अकेले हैं, भाइयो और बहनों, आप अकेले नहीं हैं। जब आपको लगता है कि सब ने आपको त्याग दिया है और कोई आपको नहीं समझता, कोई आपके साथ नहीं है, उस समय भी परमेश्वर आपके साथ है। पौलुस, 2 तिमुथियुस 4:16–17 में कहता है, "मेरे पहले प्रतिवाद के समय किसी ने भी मेरा साथ नहीं दिया, वरन् सबने मुझे छोड़ दिया था, परन्तु प्रभु मेरा सहायक रहा और मुझे सामर्थ दी।" यह अटल सत्य है। इसे जानें, चाहे आप किसी भी मार्ग पर चल रहे हों या चलने वाले हों, आप, परमेश्वर के लोग, आप कभी भी, कभी भी अकेले नहीं हैं। वह आपके साथ रहेगा। हमारा प्रभु हमारे साथ है।

दूसरा सत्य, हे परमेश्वर इसे हमारे दिलों में बैठा दे, दिल की गहराईयों में, हमारा एक राजा है जो हमारा मार्गदर्शन कर रहा है। हमारा एक राजा है जो हमारा मार्गदर्शन कर रहा है। उत्पत्ति 37–50 में हम परमेश्वर की तस्वीर को देखते हैं जो सदैव–गूढ़ राजा है। इसका हमारे जीवनों के लिए क्या अर्थ है – इससे न चूकें; परमेश्वर आपके जीवन की कुछ बातों को अनदेखा नहीं कर रहा है। क्या आप कभी सोचते हैं कि क्या वह ऐसा कर रहा है? क्या आप कभी सोचते हैं, जैसे, "परमेश्वर, क्या आप देख रहे हैं क्या हो रहा है? क्या आप नहीं जानते कि मैं इसे नहीं संभाल सकता? क्या आप जो कुछ हो रहा है उसे देख रहे हैं? क्या आपको उसकी परवाह है कि क्या हो रहा है?" इसे जानें: परमेश्वर आपके जीवन की कुछ बातों को अनदेखा नहीं कर रहा है। न केवल यह कि वह आपके जीवन की कुछ बातों को अनदेखा नहीं कर रहा है, बल्कि, भाइयो और बहनों, परमेश्वर आपके जीवन की हर बात को नियंत्रित कर रहा है। वह आपके जीवन की हर बात को नियंत्रि कर रहा है। पुनः, किसी यांत्रिक रूप में नहीं; इस रीति से नहीं कि आप या

दूसरे लोग अपने पापपूर्ण निर्णयों के लिए और अन्यथा जिम्मेदार न ठहरें। इसके विपरीत, उसी रूप में जैसा हमने यहाँ देखा है, परमेश्वर पूरी कहानी में दृश्यों के पीछे रहकर कार्य कर रहा है कि वह युसुफ को सही समय पर सही स्थान में लाए, और यही वह हमारे जीवनों में भी कर रहा है। इसके बारे में सोचें। वह विविध प्रकार की परिस्थितियों को नियंत्रित कर रहा है। आप युसुफ के जीवन को देखें। आप इनमें से किसी भी पृथक् घटना को लेकर, सब कुछ को दुःखद ठहरा सकते हैं, यदि आप केवल उसी को देखते हैं। परन्तु जब आप इन सारी घटनाओं को एक साथ रखते हैं, तो आप परमेश्वर के अनुग्रह की खूबसूरत कलाकृति को देखते हैं जिसे परमेश्वर ने युसुफ के जीवन में बुना है कि वह भलाई को, उत्तम भलाई को उत्पन्न करे।

आप इन परिस्थितियों को एक साथ होते हुए देखें, युसुफ बन्दीगृह की कोठरी में बैठा है, और ऐसा होता है कि पिलानेहारों का प्रधान और पकानेहारों के प्रधान फिरौन के क्रोध का शिकार बनते हैं, और वे भी उस बन्दीगृह में डाल दिए जाते हैं। और एक दिन उनके स्वप्न देखने के बाद, अगली सुबह युसुफ उनके पास से निकलता है और उनके चेहरों को देखता है। और ऐसा होता है कि वह इन स्वप्नों का अर्थ बताता है और पिलानेहारों के प्रधान से कहता है, "मुझे भूल न जाना।" और ऐसा होता है कि पिलानेहारों का प्रधान उसे पूरी तरह भुला देता है, जब तक कि फिरौन के स्वप्नों को समझाने की आवश्यकता नहीं पड़ती, और पिलानेहारों के प्रधान को इसके बारे में पता चलता है, और वह कहता है, "मैं जानता हूँ वह व्यक्ति कहाँ है जो इसमें आपकी सहायता कर सकता है," और वह युसुफ के पास जाता है। और ऐसा होता है कि युसुफ को सारे मिस्र पर अधिकारी बनने के लिए राजा के सामने लाया जाता है। आप इसकी योजना नहीं बनाते हैं, जैसे कि आप करने वाले कार्यों की सूची बनाकर उसे अपने कार्यक्रम में लिखते हैं। यह इस प्रकार नहीं होता है।

पिछले सप्ताह मैं मुम्बई, भारत में था, 2 करोड़ दस लाख लोगों का नगर। एक शहर के लिए यह अत्यधिक जनसंख्या है। एक दिन, मैं इस भारतीय पासबान के साथ उस शहर के घरों में सम्पर्क के लिए जा रहा था, और उसने इस एक घर में जाने की योजना बनाई थी। हम वहाँ पहुँचे, और उसने जाकर द्वारा खटखटाया, और वहाँ कोई नहीं था। और पीछे मुड़कर उसने कहा, "अब हम कहाँ चलें?" यह इस प्रकार था, "यहाँ 210 लाख लोग हैं। हम किसी दूसरे घर में जा सकते हैं," और हम दूसरे घर में जाते हैं। हम उस घर में पहुँचते हैं, और उस घर में एक बुजुर्ग महिला थी, एक दादी माँ, जो उस घर में है, जो एक सप्ताह पहले हिन्दू थी, और एक सप्ताह पहले उन्होंने सुसमाचार सुना और मसीह पर विश्वास किया। और हम कोई दो घण्टे वहाँ बैठकर विश्वास में नई इस बहन को उत्साहित करते हैं, और वह हम से कहती है,

"आज मुझे यहाँ नहीं होना था। मैं दूसरे घर में थी। उस घर में मैं सोने के लिए लेट गई थी, जब मैं लेटी थी, मुझे ऐसा लगा कि मुझे इस घर में आना चाहिए, और इसीलिए मैं यहाँ आई।" परमेश्वर ने इसे किया। यह उचित नहीं है। और तस्वीर यह हैः परमेश्वर हर पल में विविध प्रकार के लोगों में विविध प्रकार की परिस्थितियों को नियंत्रित करता है। इसके बारे में सोचें। क्या आपको पता है कि परमेश्वर केवल आपके और मेरे जीवन में ही कार्य नहीं कर रहा है? हम में से कुछ के यह एक चौंकाने वाली बात हो सकती है, परन्तु हम परमेश्वर के ब्रह्माण्ड के केन्द्र नहीं हैं। वह 680 करोड़ लोगों के जीवन में कार्य कर रहा है। इसका यह अर्थ नहीं है कि वह हमारे जीवन की बातों में घनिष्टता से शामिल नहीं है। वह शामिल है, उनमें से प्रत्येक में। परन्तु इसका यह मतलब है कि जब हम पूछते हैं, "परमेश्वर, आप मेरे जीवन में क्या कर रहे हैं?" इसका उत्तर वास्तव में उसके बारे में हो सकता है जो वह किसी दूसरे के जीवन में कर रहा है, और जो वह आपके जीवन या मेरे जीवन में कर रहा है वह हो सकता है कि किसी बिन्दू पर अन्तिम रूप से हमारे लिए न हो, बल्कि यह वास्तव में, कौन जानता है किसी दूसरे के लिए, या बहुत से लोगों के जीवन के लिए, विविध प्रकार की परिस्थितियों के लिए, विविध लोगों के विविध लक्ष्यों के लिए हो सकता है।

इसके बारे में सोचें। परमेश्वर युसुफ को नम्रता के एक बिन्दू पर, और अन्त में, आनन्द और खुशी के बिन्दू पर ला रहा था। वह युसुफ के भाइयों, याकूब के पुत्रों को उनके पाप के अंगीकार, याकूब को अन्तिम पूर्णता के बिन्दू पर ला रहा था, और परमेश्वर इसे एक साथ बुन रहा था। और इससे न चूकें; यह उत्पत्ति 50:20 का बिन्दू है, "परमेश्वर के लोगों के लिए, सारी बातें मिलकर सर्वदा भलाई को उत्पन्न करती हैं।" सर्वदा भलाई को। इसी सत्य पर पुनः बल को हम नये नियम में देखते हैं, रोमियों 8:28, "हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिए सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं; अर्थात् उन्हीं के लिए जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं।" यह तस्वीर है, और उसके आधार पर, मैं चाहता हूँ कि आप इस सत्य को सोख लेंः इस चट्टान पर खड़े हों। जीवन के दर्द को गले लगाने का एकमात्र आधार परमेश्वर का प्रबन्ध है। आज बहुत से लोग हैं, वे लोग भी जो मसीही होने का दावा करते हैं, जो इसे नहीं मानते हैं, परमेश्वर का प्रबन्ध और उसकी सर्वोच्चता, "परमेश्वर सर्वोच्च नहीं है। सब कुछ उसके नियंत्रण में नहीं है। परमेश्वर नहीं जानता कि अन्त में क्या होगा। वह भविष्य को नहीं जानता है। वह केवल हमारी ही तरह उसे खोज रहा है।" यह अत्यधिक व्याप्त है। इस प्रकार के विचार के बारे में सोचें।

युसुफ की कहानी में, बन्दीगृह में बैठा हुआ युसुफ, "आशा कि अन्त में कुछ अच्छा होगा, युसुफ। मैं तेरे साथ हूँ, और हम देखेंगे कि क्या होता है।" यहाँ पर हम युसुफ की ऐसी तस्वीर को नहीं देखते हैं। वह इस

प्रकार के खोखले विचार पर नहीं खड़ा है। यह डूबना है। वह चट्टान पर खड़ा है, और जब वह अपने भाइयों का सामना करता है – आप इसके बारे में सोचें – वह कड़वाहट, प्रतिशोध, घृणा से मुक्त है। वह इससे मुक्त है। क्यों? क्योंकि वह परमेश्वर के प्रबन्ध को जानता है, और वह अपने भाइयों का सामना करता है। बन्दीगृह से निकलकर, वह पोतीपर की पत्नी को बुरा–भला नहीं कहता है। वह पिलानेहारों के प्रधान से क्रोधित नहीं है, जो उसे भूल गया, और वह अपने भाइयों के सामने खड़े होकर उन पर दोष नहीं लगाता, उन्हें मारता नहीं है। इसके विपरीत, वह कहता है, "मेरे निकट आओ। परमेश्वर ने यह किया।" कैसी स्वतन्त्रता है यह। कैसी स्वतन्त्रता। वह जानता है कि परमेश्वर बुराई को भलाई में बदल देता है। जब आप इसे जानते हैं, तो वह आपको स्वतन्त्र कर देता है। इसके बारे में सोचें। इसके बारे में सोचें: आपके विरूद्ध पापी लोगों के बुरे शब्द और कार्य, लोग जो आपको हानि पहुँचाना चाहते हैं, परमेश्वर आपके विरूद्ध उनके बुरे कार्यों का भलाई के लिए प्रयोग करता है। यह आपको उनके प्रति कड़वाहट और प्रतिशोध और घृणा से आजाद करता है क्योंकि आप आनन्द मना सकते हैं, और अन्त में कह सकते हैं, "धन्यवाद, यह अच्छा है।" वह बुराई को भलाई में बदल देता है, और कष्ट को – यह और भी सुन्दर है – वह कष्ट को सन्तुष्टि में बदल देता है।

इसे सुनें, 41:51–52, जब युसुफ अपने पुत्रों का नाम रखता है। देखें वह उन्हें क्या नाम देता है। उत्पत्ति 41:51–52, "युसुफ ने अपने जेठे का नाम यह कहके मनश्शे रखा, कि 'परमेश्वर ने मुझ से मेरा सारा क्लेश, और मेरे पिता का सारा घराना भुला दिया है।'" दूसरे का नाम उसने एप्रैम रखा। इसे सुनें, पद 52 को कंठस्थ करें, "मुझे दुःख भोगने के देश में परमेश्वर ने फलवन्त किया है।" कितना अच्छा वचन है। परमेश्वर आपके जीवन के क्लेश के देश को लेकर उसे फलवन्त बनाता है। क्या यह वास्तव में सत्य है? क्या परमेश्वर वास्तव में कष्ट को सन्तुष्टि में बदल देता है? मेरा विश्वास है, हाँ, और मैं हमारे विश्वास के परिवार में एक व्यक्ति के बारे में बताना चाहता हूँ जो यह प्रदर्शित करता है।

जब मैं ने भारत से लौटने के लिए उड़ान भरी, फोन को चालू करते ही, मुझे सन्देश और मेल मिलने लगे कि हमारे विश्वास के परिवार के एक भाई, जॉन जोन्स, जो सुबह 11:00 बजे की सभा में उपस्थित थे, का अचानक इस सप्ताह बुधवार को हृदयाघात से देहान्त हो गया। जॉन ने मुझे अपने स्वास्थय की समस्याओं के बारे में पहले बताया था। अपनी ओर ध्यान खींचने की रीति में नहीं, परन्तु परमेश्वर की विश्वासयोग्यता की ओर संकेत करने की रीति में। मैं चाहता हूँ आप उन संघर्षों के बारे में सुनें। 29 की आयु में उन्हें गुर्दे की बीमारी हुई, 34 की आयु में मधुमेह, 38 की आयु में हृदयाघात, और 40 की आयु में पाँच हृदय की शल्य–चिकित्सा। 45 की आयु में उनके गुर्दे खराब हो गए और उन्होंने डायलिसिस शुरू किया, दिन में

पाँच घण्टे, सप्ताह में तीन दिन। एक साल बाद, उनका गुर्दा बदला गया, इन सबके कारण उन्हें तंत्रिका रोग हो गया, कोशिकाएँ कठोर हो गईं और रीढ़ की हड्डी के ऊपरी और निचले हिस्से में कठोरता आ गई, उनके मस्तिष्क के एक हिस्से में आघात के कारण सन्तुलन प्रभावित हुआ, इन सब के कारण उनकी गतिशीलता सीमित हो गई और कम होने लगी; हर दिन तीव्र पीड़ा। हमारे गीत गाते समय अधिकाँशतः वे खड़े नहीं होते क्योंकि यह उनके लिए बहुत अधिक था। अपनी स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को बताने के बाद, उन्होंने लिखा, "अब मेरे लिए सवाल, 'क्यों?' से बदलकर 'आप इन सबके द्वारा मुझे क्या सिखाना चाहते हैं?' हो गया है। और परमेश्वर ने मुझे उत्तर दिया, 'मैं तुम्हें विश्वास के द्वारा चलना और जीना सिखा रहा हूँ।'" जॉन जोन्स ने कहा, "मेरा स्वास्थ्य अत्यधिक बिगड़ गया है, चलना–फिरना बहुत सीमित हो गया है, और हर दिन तीव्र वेदना के साथ जीता हूँ। मैं हर दिन इस तथ्य के बारे में सोचता हूँ कि मैं शायद अपने पोते–पोतियों को नहीं देख पाऊँगा, और मेरी पत्नी अपने स्वर्णिम वर्षों को मेरे बिना बिताएगी, परन्तु परमेश्वर सर्वोच्च है। मेरा जीवन उसकी योजना का केवल एक टुकड़ा है। वह भला है, और सारी बातें मिलकर उन लोगों के लिए भलाई को उत्पन्न करती हैं जो उससे प्रेम करते हैं और उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए गए हैं। और चूंकि वह सर्वोच्च है, इसलिए मुझे इस बारे में चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है कि इस सब की मेरे जीवन में, मेरी मृत्यु में, या उसके बाद क्या भूमिका होगी। मुझे केवल अपनी मृत्यु तक आज्ञाकारी रहने की आवश्यकता है।"

बहनों और भाइयो, ये एक भाई के शब्द हैं जो जानता है कि परमेश्वर इस संसार में हर बात के ऊपर सर्वोच्च है; इसलिए, इस संसार में उसे कोई भय नहीं है। उसने छह माह पूर्व मुझे लिखा, और मैं चाहता हूँ कि आप इसे सुनें जो उन्होंने कहा। उन्होंने कहा, "मेरा स्वास्थ्य और मेरा चलना–फिरना निरन्तर बदतर हो रहा है, और पिछले तीन माह से यह अत्यधिक तीव्रता से हो रहा है। फिर भी, इन्हीं तीन महिनों में मैं ने एक असामान्य, लगभग आश्चर्यजनक आशा और बढ़े हुए विश्वास की अनुभूति को अनुभव किया है। जरूरी नहीं कि यह आशा और विश्वास कि वह शारीरिक चंगाई देने जा रहा है, परन्तु यह कि परमेश्वर कुछ ऐसा करने वाला है जिससे उसको अत्यधिक महिमा और सम्मान मिलेगा, और यह कि किसी प्रकार कुछ विस्मयकारी होने वाला है। मैं एक सकारात्मक व्यक्ति हूँ, लेकिन मैं कहता हूँ कि मैं ने बहुत लम्बे समय से इस स्तर की आशाजनक अपेक्षा को महसूस नहीं किया है।" बहनो और भाइयो मैं आज आपसे कह रहा हूँ कि यह हुआ है। पिछले बुधवार को, कुछ विस्मयकारी हुआ, और जॉन जोन्स मसीह की उपस्थिति में उठा लिए गए, जहाँ वे अपने सारे दर्द से मुक्त हो गए, और जहाँ उन्होंने अपने उद्धारकर्ता के चेहरे की झलक को देखा। वह जानता था कि उसके सामने क्या है क्योंकि उसका परमेश्वर सर्वोच्च है। और इसके परिणामस्वरूप, आप और मैं उसी अपेक्षा के साथ जी सकते हैं कि कुछ विस्मयकारी होने वाला है क्योंकि

हम जानते हैं कि सब कुछ परमेश्वर के नियंत्रण में है, और जीवन के दर्द को गले लगाने का सर्वोपरि और एकमात्र आधार उसका प्रबन्ध है। हम परमेश्वर के चरित्र को सीमित करके यह न सोचें कि इससे हमें सांत्वना मिलेगी। आइए हम परमेश्वर को सर्वोपरि रूप में देखें और उसकी महानता में अपनी सांत्वना को प्राप्त करें।

तस्वीर यह है। वह वास्तव में कष्टों के बीच में अपने लोगों को फलवन्त करता है। हम यह कैसे जानते हैं? मेरा मतलब है हम वास्तव में कैसे जानते हैं? शायद आप अपने जीवन में किसी अन्धेरे बिन्दू, कठिन बिन्दू के बीच में होंगे। आप कैसे जानते हैं? आप कैसे जानते हैं कि आपके चारों ओर की बुराई का प्रयोग भलाई के लिए किया जाएगा? आप कैसे जानते हैं कि कष्ट सन्तुष्टि प्रदान करेगा? और वह हमें इस अन्तिम सत्य पर लाता है। यह आपके दिल में बैठ जाए। हम जानते हैं क्योंकि हमारा एक उद्धारकर्ता है जिसने हमें छुटकारा दिया है। इस कहानी में समानान्तरों से न चूक जाएँ। इसके बारे में सोचें। उत्पत्ति में अपने लोगों की रक्षा के परमेश्वर एक भयानक पाप का प्रयोग करता है, एक भयानक पाप का; भाइयों द्वारा अपने भाई को गुलामी में बेचना। कितना शर्मनाक और अनादरपूर्ण, इसे ढाँपने के लिए बोला गया झूठ, भयानक पाप, और परमेश्वर उत्पत्ति में अपने लोगों को बचाने के लिए भयानक पाप का प्रयोग करता है, जो उस दिन के लिए आधार तैयार करता है जब परमेश्वर अपने लोगों को अनन्तकाल के लिए बचाने के लिए एक भयानक पाप का प्रयोग करेगा; जब परमेश्वर मसीह पर झूठा आरोप लगाने वाले, जाँचने वाले और क्रूस पर मसीह की हत्या करने वाले लोगों को लेकर, वह अपने लोगों को अनन्तकाल के लिए उद्धार देने के लिए उस भयानक पाप का प्रयोग करता है। इसके बारे में सोचें। यह एक आश्चर्यजनक वास्तविकता है।

इसे सुनें: दोनों कहानियों में, परमेश्वर नाश करने वालों के पापों को उनके छुटकारे का माध्यम बना देता है। भाई, और कुछ नहीं केवल अपने भाई की हानि करने की इच्छा रखते हुए, उसे गुलामी में बेच देते हैं, और परमेश्वर उनके विरूद्ध उनके पापों को को एक दिन उनके छुटकारे के लिए प्रयोग करता है। उनके पाप उनके लिए छुटकारे को उपलब्ध कराते हैं। क्रूस के चित्र की कल्पना करें। वे मसीह को क्रूस पर कीलों से ठोक रहे हैं, और हम, एक अर्थ में, उनके साथ हैं, परन्तु उसे क्रूस पर चढ़ाते समय क्या उनको यह अहसास है कि अपने इस घातक पाप में वे वास्तव में वे अपने पापों की क्षमा को संभव बना रहे हैं? इसका कोई मतलब नहीं है, परन्तु यही सुसमाचार है। युसुफ के बारे में सोचें, जब वह अपने आपको अपने भाइयों पर प्रकट करता है, उन्हें और उनके पाप को शाप देने और दोष देने की बजाय, वह कहता है, "मेरे निकट आओ। मेरे विरूद्ध तुम्हारे पापों के कारण, अब मैं तुम्हारी जरूरत को पूरा करूँगा।" और फिर, अपने आपको मसीह के सामने देखें, जिसकी पवित्रता और धार्मिकता के विरूद्ध आपने पाप किया, और शापों और

दोषारोपण की बजाय आप मसीह को अपने लोगों के रूप में आपसे कहते हुए सुनते हैं, "मेरे निकट आओ। मेरे विरूद्ध तुम्हारे पापों के कारण, अब मैं तुम्हारी आवश्यकताओं को पूरा करूँगा।" उसने हमें छुड़ाया है। इन समानान्तरों से न चूकें, और यहाँ के वायदे से न चूकें।

हमने पहले बताया कि किस प्रकार इस कहानी में यहूदा और युसुफ के बीच पारस्परिक संबंध है, और हम देखते हैं कि यहूदा परमेश्वर के लोगों को मिस्र के गोशेन में लाता है, और जब याकूब अपने पुत्रों को आशीष देता है, वह निश्चित रूप से युसुफ को अत्यधिक आशीष देता है, परन्तु सबसे अधिक आशीष किसके लिए रखी जाती है? यहूदा के लिए। क्या आपने इसे देखा, उत्पत्ति 49:8? इससे न चूकें। उत्पत्ति 49:8, "हे यहूदा, तेरे भाई तेरा धन्यवाद करेंगे, तेरा हाथ तेरे शत्रुओं की गर्दन पर पड़ेगा।" इसे सुनें: "तेरे पिता के पुत्र तुझे दण्डवत् करेंगे।" आप यहाँ की तस्वीर को देख रहे हैं? हे यहूदा, तेरे पिता के पुत्र तुझे दण्डवत् करेंगे। "यहूदा सिंह का बच्चा है। हे मेरे पुत्र, तू अहेर करके गुफा में गया है: वह सिंह अथवा सिंहनी के समान दबकर बैठ गया; फिर कौन उसको छेड़ेगा। जब तक शीलो न आए तब तक न तो यहूदा से राजदण्ड छूटेगा, न उसके वंश से व्यवस्था देनेवाला अलग होगा; और राज्य राज्य के लोग उसके अधीन हो जायेंगे।" एक राजा की प्रतिज्ञा, जो यहूदा के वंश से आएगा, और राज्य राज्य के लोग जिसके अधीन हो जायेंगे।

यहाँ एक प्रतिज्ञा है, उत्पत्ति 49:8–10 में जो आगे की ओर संकेत करती है, "परमेश्वर यहूदा के सिंह को वध हुए मेमने में बदल देगा।" वह मसीह की प्रतिज्ञा है, जो यहूदा के वंश से आएगा। और इस कहानी में हम केवल युसुफ के बारे में ही नहीं देखते हैं; बल्कि परमेश्वर अपने लोगों को बचाने के लिए युसुफ का प्रयोग कर रहा है, और, अधिक विशिष्ट रूप में, यह उस सिंह को बचाने के लिए है जो यहूदा से आएगा जिससे वध किया हुआ मेमना आएगा। यह प्रकाशितवाक्य 5 की तस्वीर है, "मत रो, देख, यहूदा के गोत्र का सिंह जयवन्त हुआ है। और सिंहासन के चारों ओर बड़ी भीड़ जो ऊँचे स्वर में कहते थे, 'तू इस पुस्तक के लेने, और इसकी मुहरें खोलने के योग्य है; क्योंकि तूने वध होकर अपने लहू से हर एक कुल और भाषा और लोग और जाति में से परमेश्वर के लिए लोगों को मोल लिया है।'" यह उत्पत्ति 49 की पूर्णता है, प्रकाशितवाक्य 5, यहूदा का सिंह वध किया हुआ मेमना है। यही मसीह है। यहाँ यही बताया गया है। इस कहानी के बिन्दू से न चूक जाएँ। अन्तिम रूप में, पवित्रशास्त्र में युसुफ एक ऐसी कहानी नहीं है जिसके बारे में हम यह कहते हुए चले जाएँ, "वाह, कितनी अच्छी कहानी है। हम वास्तव में युसुफ को पसन्द करते हैं।" नहीं। पवित्रशास्त्र में युसुफ यीशु की ओर संकेत करता है। इसीलिए वह वहाँ है।

मैं चाहता हूँ कि आप युसुफ के उन आठ चित्रणों को देखें, और मैं चाहता हूँ कि आप यीशु के बारे में सोचें। अब, समानान्तर बिल्कुल वैसे ही नहीं हैं और विवरणों को ज्यादा नहीं खींचा जा सकता, परन्तु मेरे साथ पिता के एक प्रिय पुत्र की कल्पना करें, जो पृथ्वी पर आया, भाइयों, साथी मनुष्यों, आपके और मेरे द्वारा तिरस्कृत भाई। उसने अपने आप को नम्र किया और एक विदेशी धरती पर दास बन गया, हर तरह से पवित्र और धर्मी रहा। उसे बदनाम किया गया और क्रूस पर मृत्यु की सजा दी गई। परमेश्वर ने यह किया। परमेश्वर ने यह निर्धारित किया पापी मनुष्य उसके एकलौते पुत्र की हत्या करेंगे ताकि वह सारी पृथ्वी के प्रभु के रूप में जीवित हो सके, ताकि पृथ्वी के हर कोने में यह कहा जाए, "उसके सामने दण्डवत् करो," और उसने अपने भाइयों के लिए, मेरे और आपके लिए, मेल–मिलाप का मार्ग तैयार किया। वह पिता के दाहिने हाथ उठा लिया गया, जहाँ पिता से पुत्र का पुनर्मिलन हुआ, और जहाँ वह मेरे और आपके लिए उसके साथ पूर्ण और अन्तिम छुटकारे की प्रतिज्ञा करता है। इस तरह आप जान सकते हैं कि इस संसार में यह चाहे कितना भी गहरा या अन्धियारा क्यों न हो जाए, बुराई भलाई में और कष्ट सन्तुष्टि में बदल जाएगा। आप यह जान सकते हैं, क्योंकि छुटकारे की इस भव्य कहानी में, हमारे पापों से हमें उद्धार देने वाला एक दिन हमें अपने साथ महिमा देगा। निश्चित रूप से। उस चट्टान पर खड़े हों। यह निश्चित है।